Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **20.02.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

आज 20 फ़रवरी का दिन है और यह दिन अहमदिय्या जमाअत में पेश गोई (भविष्य वाणी) मुस्लेह मौऊद के संदर्भ में जाना जाता है। यह केवल पेश गोई ही नहीं बल्कि एक महान आसमानी निशान है जिसको ख़ुदाए करीम जल्ले शान्हू ने हमारे नबी करीम रऊउफ़ुर्रहीम मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई तथा महानता प्रकट करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज 20 फ़रवरी का दिन है और यह दिन अहमदिय्या जमाअत में पेश गोई (भविष्य वाणी) मुस्लेह मौऊद के संदर्भ में जाना जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की सत्यता प्रमाणित करने के लिए अल्लाह तआला से निशान मांगा था। क्यूंकि मुस्लिम विरोधियों के इस्लाम पर हमले अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुके थे। इस लिए आप अलैहिस्सलाम ने चिल्ला कशी फ़रमाई और अल्लाह तआला ने अदभुत निशान की दुआ की क़बूलियत के फ़लस्वरूप आपको सूचना दी। इस के विवरण का तो मैं इस वर्णन नहीं करूंगा। इस विषय पर पहले कई ख़ुत्बे दे चुका हूँ। फिर हर वर्ष जमाअत में पेश गोई मुस्लेह मौऊद के जलसो का भी आयोजन होता है। उनमें आलिम तथा अन्य तक़रीरें करने वाले इसके विषय में बयान करते हैं। यह विवरण तो जमाअते सामने आता रहता है। इस साल भी इन्शाअल्लाह आएगा, जलसे हो रहे हैं।

आज मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु के अपने शब्दों में, पेश गोई के विषय में जो आपने फ़रमाया, विभिन्न अवसरों पर, वह आपके सामने रखूंगा। समस्त बातों का तो वर्णन नहीं किया जा सकता केवल कुछ बातें तथा कुछ संदर्भ पेश करूंगा। 1944 में पेश गोई मुस्लेह मौऊद की पृष्ट भूमि बयान करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया कि आज से पूरे अट्ठावन वर्ष पूर्व 20 फ़रवरी के दिन 1886 ई0 में, होशियान पुर में, उस मकान में जो कि मेरी उंगली के सामने है, जहां आप तक़रीर फ़रमा रहे थे सामने ही मकान था, मैदान के। एक ऐसा मकान था जो उस समय तबेला कहलाता था। क़ादियान का एक गुमनाम व्यक्ति जिसको क़ादियान के लोग भी पूरी तरह नहीं जानते थे। लोगों के उस विरोध को देखकर जो इस्लाम तथा इस्लाम के संस्थापक के प्रति वे रखते थे, अपने ख़ुदा के समक्ष एकांत अवस्था में इबादत करने तथा उसकी सहायता एंव समर्थन का निशान मांगने के लिए आया। और चालीस दिन तक लोगों से अलग रह कर उसने अपने ख़ुदा से दुआएं मांगीं। चालीस दिन की दुआओं के पश्चात ख़ुदा ने उसको एक निशान दिया। वह निशान यह था कि न केवल उन वादों को जो मैं ने तुम्हारे साथ किए हैं, पूरा करूंगा और तुम्हारे नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊंगा, बल्कि इस वादे को अधिक शान के साथ पूरा करने के लिए मैं तुम्हें एक बेटा दूंगा जो कुछ विशेष प्रतिभाओं से परिपूर्ण होगा। वह इस्लाम को दुनिया के किनारों तक फैलाएगा। अल्लाह के कलाम के भेदों को, लोगों को समझाएगा। रहमत और फ़ज़्ल का निशान होगा और वे दीनी व दुनयावी ज्ञान जो इस्लाम के प्रसार के लिए आवश्यक हैं, उसे प्रदान किए जाएंगे। इसी प्रकार अल्लाह तआला उसको लम्बी आयु अता फ़रमाएगा यहां तक कि वह दुनिया के किनारों तक ज़्याति प्राप्त करेगा।

फिर आपने एक स्थान पर फ़रमाया, जब यह इश्तिहार प्रकाशित हुआ तो दुश्मन ने इस पर आपत्तियों का एक क्रम आरम्भ कर दिया। तब 22 मार्च 1886 को आपने एक अन्य इश्तिहार प्रकाशित किया। दुश्मनों ने यह आक्षेप किया था कि ऐसी भविष्य वाणी का क्या भरोसा किया जा सकता है कि मेरे यहां एक लड़का पैदा होगा। अतः यदि आपके यहां भी कोई लड़का पैदा हो जाए तो इसके द्वारा यह कैसे प्रमाणित हो गया कि दुनिया में इसके द्वारा ख़ुदा तआला का कोई निशान प्रकट हुआ है। आपने लोगों के इस आक्षेप का उत्तर देते हुए 22 मार्च के इश्तिहार में लिखा कि यह केवल एक पेश गोई नहीं अपितु एक महान आसमानी निशान है जिसको ख़ुदाए करीम जल्ले शान्हू ने हमारे नबी करीम रऊउफ़ुर्रहीम मुहज़्मद मुस्तुफ़ा सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई तथा महानता प्रकट करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया। फिर इसी इश्तिहार में आपने लिखा कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल तथा उसके उपकार एंव बरकतें हज़रत ख़ातमुल अम्बिया सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा वंद करीम ने इस विनीत की दुआ क़बूल करके ऐसी बरकत वाली आत्मा को भेजने का वादा फ़रमाया है जिसकी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष बरकतें सारी धरती पर फैलेंगी। आपने जब यह घोषणा की उस समय आपकी आयु पचास वर्ष से अधिक थी। यह सारांश था उस इलहाम का, उसके विस्तार में नहीं जा रहा मैं कि किस प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद की बरकतें, आगे बयान भी होगा कुछ कि किस प्रकार फैली ये सारी बातें। कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि आप मुस्लेह मौऊद नहीं बल्कि बाद में कहीं तीन चार सौ वर्षों के पश्चात या सौ वर्ष अथवा दो सौ वर्षों के बाद मुस्लेह मौऊद पैदा होगा। ये आरोप करने वाले हमें बताते हैं कि जब

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के समक्ष यह दुआ की तो ख़ुदा ने आपको यह सूचना दी कि आज से तीन सौ साल के बाद हम तुझें एक बेटा प्रदान करेंगे जो इस्लाम की सत्यता का प्रमाण होगा। क्या दुनिया में कोई भी ऐसा व्यक्ति है जो इस बात को उपयुक्त कह सकता है।

पंडित लेख राम, मुंशी इन्द्र मुरादाबादी तथा क़ादियान के हिन्दु यह कह रहे थे कि इस्लाम के सम्बंध में यह दावा कि उसका ख़ुदा दुनिया को निशान दिखाने की शक्ति रखता है, एक झूठा तथा निराधार दावा है। यदि इस दावे में कोई औचत्य है तो हमें निशान दिखाया जाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के सामने झुकते हैं तथा कहते हैं कि ऐ ख़ुदा! मैं तुझसे दुआ करता हूँ कि तू मुझे रहमत का निशान दिखा, तू मुझे रहमत और क़ुदरत का निशान प्रदान कर। इस लिए यह निशान तो ऐसे निकटतम समय में ही प्रकट होना चाहिए था जबकि वे लोग जीवित होते जिन्होंने यह निशान मांगा था। अतः ऐसा ही हुआ, 1889 में जब मेरी पैदायश अल्लाह तआला की पेश गोइयों के अनुसार हुई तो वे लोग जीवित थे जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वह निशान मांगा था। फिर जैसे जैसे मैं बड़ा हुआ अल्लाह तआला के निशान पहले की अपेक्षा अधिक से अधिक प्रकट होते चले गए।

अपने एक सपने का वर्णन फ़रमाते हुए कि किस प्रकार यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेश गोई, मुस्लेह मौऊद पर ठीक ठीक पूरी होती है, हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मैं उन समानताओं को बयान करता हूँ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेश गोई के साथ मेरे सपने को हैं। एक सपना आपने देखा था, जैसा कि मैं ने कहा। सपने में मैं ने देखा कि मेरी ज़बान पर यह वाक्य जारी हुआ कि ان المسیح الموعود مثیلہ وخلیفتہ इन शब्दों का मेरी ज़बान पर जारी होना मेरे लिए इतना विचित्र था, प्रत्यक्ष में तो हो ही सकता अदभुत चमत्कार, परन्तु सपने में भी मेरी ऐसी दशा हो गई कि सम्भव था कि इस हंगामे से मैं जाग उठता। मेरे मुंह से ये क्या शब्द निकल गए हैं। बाद में कुछ दोस्तों ने ध्यान दिलाया कि मसीही आत्मा होने का वर्णन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इश्तिहार दिनांक 20 फ़रवरी 1886 में भी आता है। दूसरे मैं ने सपना देखा कि मैं ने प्रमिमाएं तुड़वाई हैं। इसका संकेत भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस पेश गोई के दूसरे भाग में पाया जाता है कि वह रूहुलहक़ की बरकत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। मौऊद बेटे की पेश गोई में भी ये शब्द हैं कि वह जल्दी जल्दी बढ़ेगा। इसी प्रकार सपने में मैं ने देखा कि मैं कुछ अन्य देशों में गया हूँ और फिर वहां भी मैं ने अपने काम को समाप्त नहीं किया बल्कि मैं और आगे जाने का निश्चय कर रहा हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर अल्लाह तआला ने जो कलाम अवतरित किया उसमें भी इस ओर संकेत पाया जाता है अतः लिखा है कि वह ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा। ये शब्द भी उसके दूर दूर जाने तथा चलते चले जाने की ओर संकेत दे रहे हैं।

फिर पेश गोई में यह वर्णन आता है कि वह प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष विद्याओं से परिपूर्ण किया जाएगा। उसकी ओर भी मेरे सपने में संकेत किया गया है। अतः सपने में मैं बड़े ज़ोर से कह रहा हूँ कि मैं वह हूँ जिसे इस्लाम का ज्ञान, अरबी ज्ञान तथा इस भाषा का दर्शन शास्त्र माँ की गोद में उसकी दोनों छातियों से दूध के साथ पिलाए गए थे। फिर लिखा था वह अल्लाह तआला के प्रताप को प्रकट करने का कारण होगा। इसके सम्बंध में भी सपने में व्याज़्या पाई जाती है जैसा कि मैं ने बताया कि सपने में मेरी ज़बान को प्रयोग में लाया गया तथा मेरी ज़बान से ख़ुदा तआला ने बोलना आरम्भ कर दिया। फिर रसूल करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और आपने मेरी ज़बान से कलाम फ़रमाया। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए तथा आपने मेरी ज़बान से बोलना आरम्भ कर दिया। यह अल्लाह के प्रताप का विचित्र दर्शन था जिसका पेश गोई में भी वर्णन पाया जाता था। अतः यह भी इन दोनों समानता पाई जाती है।

फिर लिखा था, वह साहिबे शिकोह और अज़मत और दौलत होगा। और ये शब्द पेश गोई के तथा सपने में भी यह दिखाया गया है कि एक क़ौम है जिसमें मैं एक व्यक्ति को लीडर नियुक्त करता हूँ तथा ऐसे शब्दों में जैसे एक शक्ति शाली राजा अपने सेवक को कह रहा हो, उसे कहता हूँ कि ऐ अब्दुल शकूर! तुम मेरे सामने इस बात के उत्तर दायी होगे कि तुम्हारा देश निकट भविष्य में तौहीद पर ईमान ले आए, शिर्क को छोड़ दे। रसूल करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षानुसार कर्म करे तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथनों का पालन करे। ये साहिबे शिकोह व अज़मत के ही वाक्य हो सकते हैं जो सपने में मेरी ज़बान पर जारी किए गए और यह जो पेश गोई में वर्णन आता है कि हम उसमें अपनी ओर से आत्मा डालेंगे। यह इस बात की ओर संकेत था कि उस पर अल्लाह का कलाम नाज़िल होगा और सपने में भी इसका वर्णन आता है। अतः विधि के विधान के अंतर्गत सपने में मैं समझता हूँ कि अब मैं नहीं बोल रहा बल्कि ख़ुदा तआला की ओर से इलहाम के रूप में मेरी ज़बान पर बातें जारी की जा रही हैं। अतः इस भाग में पेश गोई के उन्हीं शब्दों के पूरा होने की ओर संकेत है कि हम उसमें अपनी रूह डालेंगे।

1936 ई0 की शूरा को सम्बोधित करते हुए जब सहाबा की बड़ी संज़्या उपस्थित थी तथा ताबिईन भी अधिकांश थे हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाया- यह केवल ख़िलाफ़त और निज़ाम का ही सवाल नहीं बल्कि ऐसा सवाल है जो मज़हब का सवाल है। फिर केवल ख़िलाफ़त का सवाल नहीं, ऐसी ख़िलाफ़त का सवाल है जो वादे की ख़िलाफ़त है। मैं इस लिए ख़लीफ़ः नहीं कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल की वफ़ात के दूसरे दिन अहमदिया जमाअत के लोगों ने एकत्र होकर मेरी ख़िलाफ़त को स्वीकार किया बल्कि इस लिए भी ख़लीफ़ः हूँ कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वला की ख़िलाफ़त से भी पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला के इलहाम के

द्वारा फ़रमाया था कि मैं ख़लीफ़ः हूंगा। अतः मैं ख़लीफ़ः नहीं बल्कि वादे के अनुसार ख़लीफ़ः हूँ, मैं दूत नहीं बल्कि मेरी आवाज़ ख़ुदा तआला की आवाज़ है कि ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इसकी सूचना दी थी। इस प्रकार इस ख़िलाफ़त की प्रतिष्ठा दूत एंव ख़िलाफ़ के मध्य का स्तर है तथा यह अवसर ऐसा नहीं कि अहमदिया जमाअत इसको व्यर्थ में जाने दे और फिर ख़ुदा तआला के समक्ष निश्चिंत हो जाए। जिस प्रकार यह बात उचित है कि नबी रोज़ रोज़ नहीं आते इसी प्रकार यह भी उचित है कि वादे द्वारा ख़लीफ़ः भी रोज़ नहीं आते।

फिर 1944 में जब आपने दावा किया। हज़रत मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा की, तो आपने फ़रमाया- हमारी जमाअत के दोस्तों ने ये तथा इसी प्रकार की अन्य पेश गोइयां बार बार मेरे सामने रखीं तथा आग्रह किया कि अपने आपको इनका सत्यापक प्रमाणित करूं। परन्तु मैं ने उन्हें सदा यही कहा कि पेश गोई अपने सत्यापन को स्वंय प्रकट किया करती है। यदि ये पेश गोइयां मुझ से सम्बंधित हैं तो ज़माना स्वंय गवाही दे देगा कि इन पेश गोइयों का सत्यापक मैं हूँ। क्यूंकि ये पेश गोइयां मेरे ज़माने में तथा मेरे हाथ से पूरी हुई हैं इस लिए मैं ही इनका सत्यापक हूँ तो इसमें कोई आपत्ति न थी। किसी कश्फ़ का, इलहाम का समर्थन के रूप में होना एक अधिक बात है परन्तु ख़ुदा तआला ने अपने विधान के अंतर्गत यदि इस बात को प्रकट कर दिया तथा मुझे अपनी ओर से सूचना भी दे दी कि मुस्लेह मौऊद से सम्बंधित पेश गोईयां मेरे लिए हैं। अतः आज मैं ने पहली बार वे सारी पेश गोईयां मंगवा कर इस नीयत के साथ देखीं कि मैं इन पेश गोईयों की वास्तविकता समझूं और देखूं कि अल्लाह तआला ने इनमें क्या कुछ बयान फ़रमाया है। अब इन पेश गोईयों के पढ़ने के बाद मैं ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि ख़ुदा तआला ने यह पेश गोई मेरे द्वारा ही पूरी की है। या तो वह समय था कि जब आपने फ़रमाया कि मुझे आवश्यकता नहीं कि किसी प्रकार का ऐलान करूं, और वह समय भी आया जब आप पर अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़रमा दिया, खोल दिया कि आप ही मुस्लेह मौऊद हैं इस लिए घोषणा करें। तो उस समय आपने आपत्ति कर्ताओं तथा न मानने वालों को खुला चैलेंज दिया। आपने फ़रमाया कि मैं कहता हूँ और ख़ुदा तआला की शपथ लेकर कहता हूँ कि मैं ही मुस्लेह मौऊद का सत्यापन हूँ तथा मुझे ही अल्लाह तआला ने इन पेश गोईयों का चरितार्थ बनाया है जो वादे के अनुसार एक आने वाले के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाईं। जो व्यक्ति समझता है कि मैं ने झूठ से काम लिया है अथवा इसके सम्बंध में झूठ तथा फ़रेब किया है वह आए तथा इस विषय पर मेरे साथ मुबाहिला कर ले और या फिर अल्लाह तआला की ओर से आने वाले अज़ाब की शपथ लेकर घोषणा कर दे कि उसे ख़ुदा ने कहा है कि मैं झूठ से काम ले रहा हूँ। फिर अल्लाह तआला स्वंय अपने आसमानी निशान के द्वारा निर्णय कर देगा कि कौन झूठा है और कौन सच्चा।

फिर पेश गोई के जो अन्य भाग थे उनके कुछ अंश बयान करता हूँ। उदारणतः एक अंश यह था कि वह प्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाएगा। अर्थात उसे अल्लाह तआला की ओर से दीन तथा क़ुरआन का ज्ञान सिखलाया जाएगा और ख़ुदा स्वंय उसका अध्यापक होगा। फ़रमाया- मेरी शिक्षा जिस रंग में हुई है वह अपने आप में ज़ाहिर करती है कि इंसानी हाथ मेरी शिक्षा में नहीं था।

फिर आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते के द्वारा मुझे क़ुरआन करीम का ज्ञान प्रदान किया है तथा मेरे भीतर उसने इस प्रकार का गुण पैदा कर दिया है जिस प्रकार किसी को ख़ज़ाने की चाबी मिल जाती है इसी प्रकार मुझे क़ुरआन करीम के ज्ञान की कुंजी मिल चुकी है। एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि स्वंय मैं ने कई विद्याएं फ़रिश्तों से सीखी हैं। मुझे एक बार एक फ़रिश्ते ने सूरः फ़ातिहः की व्याज़्या पढ़ाई। फिर आपने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त की पदवी को संभालने के पश्चात अल्लाह तआला ने मुझ पर क़ुरआन के ज्ञान इतनी अधिकांश संज़्या में खोले कि अब क़यामत तक मुस्लिम उम्मत इस बात के लिए विवश है कि मेरी किताबों को पढ़े तथा उनके द्वारा लाभान्वित हो। अतः मुझे ये लोग चाहे कुछ कहें, चाहे कितनी भी गालियां दें उनकी झोली में यदि क़ुरआन करीम का ज्ञान आएगा तो मेरे द्वारा ही, तथा दुनिया उनको यह कहने पर विवश होगी कि ऐ नादानों! तुम्हारी झोली में तो जो कुछ भरा हुआ है यह तुमने इसी से लिया है, फिर इसका विरोध तुम किस मुंह से कर रहे हो?

फिर एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि 1907 में सबसे पहली बार मैं ने पब्लिक तक़रीर की। तक़रीर आधे घन्टे अथवा पौने घन्टे जारी रही। जब मैं तक़रीर समाप्त करके बैठा तो मुझे याद है कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने फ़रमाया- मियां तुमको मुबारकबाद देता हूँ कि तुम ने ऐसी उत्तम तक़रीर की।

वह अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाएगा, आप फ़रमाते हैं कि से अभिप्राय वे विशेष ज्ञान हैं जिनका सम्बंध विशेष रूप से ख़ुदा तआला के साथ है जैसे परोक्ष का ज्ञान। इस प्रकार इस मार्ग में भी अल्लाह तआला ने मुझ पर विशेष अनुकज़्पा फ़रमाई है तथा सैकड़ों सपने तथा इलहाम मुझे हुए हैं जो परोक्ष के ज्ञान पर आधारित हैं। फिर फ़रमाते हैं- तीन को चार करने के बारे में कि यह भी उचित नहीं कि तीन को चार करने वाले की निशानी मुझ पर चरितार्थ नहीं होती। मैं ख़ुदा तआला की कृपा से कई रंग में तीन को चार करने वाला हूँ। पहली यह कि मुझ से पहले मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब, मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद साहब तथा बशीर अव्वल पैदा हुए तथा चौथा मैं हुआ। दूसरे इस प्रकार कि मेरे बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीन बेटे हुए और इस प्रकार मैं ने उन तीन को चार कर दिया। अर्थात मुबारक अहमद, मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद और मिर्ज़ा बशीर अहमद और चौथा मैं। तीसरे इस प्रकार मैं तीन को चार करने वाला साबित हुआ

कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवित संतान में से हम केवल तीन भाई अर्थात मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब और मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान रखने के अनुसार आपके रूहानी बेटों में शामिल थे। मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब आपकी रूहानी संतान में शामिल नहीं थे। उन्हें हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल पर बड़ी आस्था थी परन्तु विश्वास के बावजूद आपके ज़माने में वे अहमदी न हुए परन्तु जब मेरा ज़माना आया तो अल्लाह तआला ने ऐसे सामान किए कि वे मेरे द्वारा अहमदियत में दाख़िल हो गए। इस प्रकार ख़ुदा तआला ने मुझे तीन को चार करने वाला बना दिया। फिर इस प्रकार ज़ी मैं तीन को चार करने वाला हूँ कि मैं इलहाम के चौथे साल पैदा हुआ। 1886 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पेश गोई की थी।

अल्लाह के प्रताप का कारण होगा, फ़रमाते हैं कि पांचवीं सूचना यह दी गई थी कि उसका अवतरण अल्लाह के प्रताप का कारण होगा। यह सूचना भी मेरे ज़माने में पूरी हुई। अतः मेरे ख़िलाफ़त की गद्दी पर बैठते ही पहला विश्व युद्ध हुआ तथा अब द्वित्तीय युद्ध आरम्भ है जिसके कारण अल्लाह का जलाल प्रकट हो रहा है।

वह जल्द जल्द बढ़ेगा, जब मैं ख़लीफ़ः हुआ उस समय हमारे ख़ज़ाने में केवल चौदह आने की पूंजी थी और अटठारह हज़ार का क़र्ज़ा था। यदि उसकी सहायता और दया मुझ पर न हो तो मैं कुछ नहीं कर सकता, परन्तु मुझे उस पाक ज़ात पर पूरा विश्वास है कि वह अवश्य मेरी सहायता करेगा। इस प्रकार भांति भांति के विरोध हुए, राजनैतिक भी और धार्मिक भी, भीतरी भी और बाहरी भी परन्तु ख़ुदा तआला ने मुझे तौफ़ीक़ दी कि मैं जमाअत को विकास की ओर ले जाऊँ।

एक पेश गोई यह भी की गई थी कि वह असीरों की रुस्तगारी (बन्दियों की स्वतंत्रता) का मोजिब होगा, अल्लाह तआला ने इस पेश गोई को मेरे द्वारा पूरा किया। पहले तो इस प्रकार कि अल्लाह तआला ने मेरे द्वारा उन क़ौमों को सत्य मार्ग दिखाया जिनकी ओर मुसलमानों का कोई ध्यान नहीं था तथा वे बड़ी दयनीय तथा नीच अवस्था में थीं। वे बन्दियों के जैसा जीवन व्यतीत करती थीं। अर्थात पश्चिमी अफ़रीक़ा तथा अमरीका, दोनों देशों में हब्शी क़ौमें अधिकता से इस्लाम ला रही हैं। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उन क़ौमों में तबलीग़ का अवसर प्रदान फ़रमाकर मुझे असीरों का रुस्तगार बनाया तथा उनके जीवन स्तर ऊंचा करने का सामर्थ्य प्रदान किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की ओर से यह सूचना दी गई थी कि मैं तेरे नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊंगा। अतः हम देखते हैं कि ऐसा ही हुआ। जब मैं पैदा हुआ तो उसके दो, ढाई महीने के बाद आपने लोगों से बैअत ली और इस प्रकार अहमदिया सिलसिले का आधार दुनिया में स्थापित हो गया। जैसा कि ख़ुदा तआला ने पेश गोई में बताया था कि वह ज़मीन के किनारों तक ज़्याति पाएगा। अल्लाह तआला ने मुझे वरदान दिया कि विभिन्न देशों में अहमदिया मिशन स्थापित करूं।

इस प्रकार दुनिया में कोई ऐसी क़ौम नहीं जो आज अहमदिया सिलसिले से परिचित न हो, विश्व की कोई ऐसी क़ौम नहीं जो यह न अनुभव करती हो कि अहमदियत एक बढ़ता हुआ सैलाब है जो उनके देशों की ओर आ रहा है। सराकारें उसके प्रभाव को अनुभव कर रही हैं बल्कि कुछ देश उसको दबाने का भी प्रयास करते हैं और यह केवल उस ज़माने की बात नहीं, आजकल भी ये बातें सामने आ रही हैं। अतः रूस में जब हमारा मुबल्लिग़ गया तो उसे मारा भी गया, पीटा भी गया तथा लम्बे समय तक बन्दी बनाकर रखा गया। परन्तु क्यूंकि ख़ुदा का वादा था कि वह इस सिलसिले को फैलाएगा तथा मेरे द्वारा इसको दुनिया के किनारों तक ज़्याति देगा। इस लिए उसने अपनी कृपा व दया से उन सारे स्थानों पर अहमदियत को पहुंचाया बल्कि कई स्थानों पर बड़ी बड़ी जमाअतें स्थापित कर दीं। पेश गोई के तो विजिन्न भाग हैं जो आपके अस्तित्व में बड़े वैभव के साथ पूरे हुए तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता को प्रकट करते रहे। आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम की शान को बढ़ाते रहे। अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमत सदा बरसाता रहे और हमें भी अपना कर्तव्य निर्वाह करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar Ayyadahullhu Ta'la 20.02.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*